हमारी बात

'सबला' की ओर से सभी पाठकों को नए साल की ढेरों बधाइयां। पुराना वर्ष बीता और शुरू हुआ हम औरतों के लिए संघर्ष का एक नया साल। गया समय चाहे जैसा भी बीता हो, पर जाते-जाते एक आस की किरण ज़रूर दिखा गया। जैसा कि हम सभी को मालूम है कि भंवरी बाई बलात्कार केस के सभी अभियुक्त खुले-आम घूम रहे थे। ग्यारसा गूजर और उसके चार साथियों ने उच्च न्यायालय में जमानत के लिए अर्जी दाखिल की थी। पर उच्च न्यायालय ने इस अर्जी को नामंजूर कर दिया।

न्यायाधीश जस्टिस टिबरवाल ने अपने फैसले में कहा—"भंवरी बलात्कार केस पूरी तरह से रंजिश और बदला लेने की भावना को साबित करता है। ग्यारसा गूजर ने भंवरी से बलात्कार अपनी ताक़त और सत्ता के बल पर किया। भंवरी ने आखा तीज पर रामकरन गूजर की नन्हीं बच्ची की शादी रुकवाई थी। इसलिए सजा के तौर पर गूजरों ने भंवरी बाई के साथ सामूहिक बलात्कार किया। गूजर समुदाय की ताक़त के डर से इलाके की पुलिस और गांववालों ने भंवरी का साथ नहीं दिया। इसलिए भंवरी को दूसरे गांव के लोगों से मदद मांगनी पड़ी। ऐसी स्थिति में भंवरी बाई ने अगर रपट एक दिन देर से लिखवाई तो वह कानूनी तौर पर देर नहीं मानी जाएगी। ग्यारसा गूजर और उसके चारों साथियों की जमानत नहीं हो सकती। उनकी तुरन्त गिरफ्तारी के वारंट जारी होने चाहिए।"

इस फैसले ने हमारी जीत में एक और कदम का इज़ाफा किया है। नए साल में हम अपने अधिकारों के संघर्ष को जारी रखने का वादा दोहराते हैं। अब हमारी कोशिश होगी कि अपराधियों की गिरफ्तारी जल्दी से जल्दी हो। साथ ही औरतों के खिलाफ होने वाली हिंसा की दूसरी वारदातों में भी हमें न्याय मिले।

अपना विरोध, अपनी एकता, अपना बहनचारा दिखाने के मौके मिलते हैं 'नारी मुक्ति संघर्ष' सम्मेलनों में। पिछला सम्मेलन (चौथा) 1991 में कालिकट में हुआ था। इन सम्मेलनों में हम एकजुट हो कर अपने विचार, खुशी, गम, रोष, ताक़त प्रदर्शित करती रही हैं। ऐसा ही एक मौका हमें पांचवें 'नारी मुक्ति संघर्ष' सम्मेलन, तिरुपति (दक्षिण भारत) में मिला।

आप और हम जैसी न जाने कितनी ही बहनों ने इसमें हिस्सा लिया और अपने-अपने खट्टे-मीठे अनुभव बांटे। पर हमारा काम यहीं खत्म नहीं हो जाता। जब हम इस दुनिया से निकल कर वापस समाज में आती हैं, तब शुरू होता है हमारा असली संघर्ष। इस समाज में अपनी बात लोगों के सामने रखना, अपनी पहचान बनाना, अपने हकों के लिए जूझना, यही तो है असली जागरूकता। जो बातें सम्मेलन में विचारों के रूप में सामने आती हैं उन्हें हम रोजमर्रा के जीवन में उतारने की कोशिश करती हैं। तभी मिलती है सच्ची मुक्ति।

नया साल हम सबके लिए खुशियां लाएगा, सपने पूरे करेगा, यही हमारी उम्मीद है और यही है विश्वास।

—जुही